विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – सप्तम दिनांक -१० -०५ - २०२१

विषय -हिन्दी विषय शिक्षक -पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -१ समर्पण कविता के भावार्थ को स्पष्ट करेंगे।

मन समर्पित .... और भी दें।

कठिन शब्दार्थ
-तन = शरीर समर्पित = सौंपा हुआ, भेंट किया गया।

संदर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक ‘कादम्बरी के ‘समर्पण’ नामक कविता से ली गई हैं। इस कविता के रचयिता रामावतार त्यागी जी हैं।

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने स्वदेश के प्रति अनन्य भक्ति प्रकट करते हुए तन-मन-धन-जीवन अर्थात् सर्वस्व समर्पित करने के पश्चात भी कुछ और भेंट चढ़ाने की इच्छा की है।

व्याख्या – कवि के हृदय में स्वदेश प्रेम का महासागर हिलोरें ले) रहा है। वह तन-मन-धन-जीवन सब कुछ देश को समर्पित कर देना चाहता है; फिर भी उसे सन्तोष नहीं होता तथा वह देश की मिट्टी पर कुछ और न्योछावर करने की कामना करता है।

माँ तुम्हारा .... और भी दें।
कठिन शब्दार्थ-अकिंचन = बहुत गरीब। निवेदन = विनम्रतापूर्वक कहना, प्रार्थना। भाल = मस्तक, सिर। अर्पित = भेंट किया हुआ। समर्पण = भेट।

संदर्भ एवं प्रसंग – पूर्ववत् ।

व्याख्या – कवि कहता है- हे माँ! मैं दीन-हीन तुम्हारे ऋण से पूरी तरह दबा हुआ हूँ; फिर भी यह निवेदन है कि मैं जब भी थाल में अपना सिर सजाकर तुम्हें समर्पित करने आऊँ; तुम दयाकर अवश्य स्वीकार कर

लेना! मेरा गीत, प्राण और एक-एक रक्तबिन्दु तुम्हें समर्पित है; फिर भी, हे मेरे देश की पुण्य भूमि! मैं कुछ और न्योछावर करना चाहता हूँ!
माँज दो तलवार ……………………………. और भी हूँ।

कठिन शब्दार्थ-माँज दो = रगड़ कर साफ कर दो। आशीष = आशीर्वाद। घनेरी = बहुत सी, गहरी। प्रश्न = मन की जिज्ञासा, शंका।।

प्रसंग-यह पद्यांश कवि रामावतार त्यागी द्वारा रचित 'समर्पण' कविता से लिया गया है। इसमें देश-सेवा का भाव व्यक्त किया गया है।

व्याख्या-

कवि कहता है कि हे मातृभूमि! तुम तलवार चमका दो, इसमें देरी मत करो, लाओ। मेरी कमर पर कसकर ढाल बाँध दो। मेरे ललाट पर अपने चरणों की धूल मसल दो, अर्थात् धूल का टीका लगा दो। तुम मेरे सिर पर अपने आशीर्वाद की घनी छाया कर दो। हे मेरे देश की धरती ! मेरे स्वप्न और मेरी जिज्ञासा तुम्हें समर्पित है, मेरी आयु। का एक-एक क्षण तुम्हारे चरणों में अर्पित है। मैं चाहता हूँ कि तुम्हें इससे भी कुछ अधिक भेंट करूं?

गान अर्पित ………………………. कण-कण समर्पित।
व्याख्या :
कवि मातृभूमि की कृपा से इतना उपकृत है कि वह न केवल सर्वस्व समर्पित करने की इच्छा करता है; अपितु अपनी भावनाएँ हर्ष-उल्लास, प्राण एवं रक्त की एक-एक बूंद न्योछावर करना चाहता है अर्थातृ समस्त भौतिकता के साथ-साथ अपना मानस-चितंन-मनन, इच्छा-अपेक्षा भी समर्पित करने की कामना करता है।